दादी विनम्रता की मूर्ति थी

ब्र.कु.गंगाधर

सन् 1978 में मुझे परमात्मा का ज्ञान मिला। इसके कुछ ही समय बाद सन् 1985 में पदयात्रा निकलने वाली थी और उसमें नागपुर क्षेत्र को 'ओम शांति भवन' का डेकोरेशन करने की सेवा मिली थी। तब मैं मधुबन पहली बार गया था। मधुबन पहुंचते ही मेरी हार्दिक इच्छा थी कि मैं दादीजी से मिलूं। उसका कारण था दादीजी की स्नेह भरी रूहानी दृष्टि जो सबमें उमंग-उत्साह का संचार कर देती थी। मैं उनकी दिव्य मुस्कान व दिव्य आभा से भरे व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष देखने के लिए आतुर था। जब मेरी उनसे मुलाकात हुई तो जैसे मेरी सारी थकान ही मिट गई हो। ऐसा तेज था उनके व्यक्तित्व में। तब मुझे यह पहली बार अनुभव हुआ कि इस जन्म में भगवान की सेवा करना बहुत बड़े भाग्य की बात है। और मैंने मन ही मन यह निश्चय कर लिया कि अब यह जन्म मैं भगवान की सेवा में बिताऊंगा। यह संकल्प दादीजी से प्रथम बार मिलते ही उत्पन्न हुआ। जब मैं टोली विभाग में सेवा करता था तो दादी जी के साथ हर समय मिलना होता था। दादीजी नाश्ते के बाद हर रोज टोली डिपार्टमेंट में आती और टोली का एक छोटा सा टुकड़ा लेकर हमसे पूछती थी कि आज आपने अमृतवेला किया? आज बाबा ने मुरली में क्या कहा? दादीजी का इस तरह से टोली डिपार्टमेंट में आना और पूछना सचमुच में एक अनोखी शक्ति का एहसास कराती थी। दादीजी हमेशा मुझे कहती थी कि मैं आपको एक नई सेवा दूंगी। ऐसा लगभग एक महीने तक रोज सुबह दादीजी आती और वही वाक्य दोहराती थी। एक बार मैंने कहा दादीजी आप बताइये मैं कोई भी सेवा करने के लिए दिल से तैयार हूँ। तब दादीजी ने ज्ञानसरोवर के निर्माण सम्बन्धी एकाउण्ट की सेवा दी। और दादीजी ने पूछा कि आप जायेंगे ना! उस समय मुझे बहुत ही खुशी हुई कि इतनी बड़ी सेवा के लिए दादीजी ने मुझे चुना। यह ज्ञानसरोवर के कार्य के लिए यह पहला बड़ा प्रोजेक्ट था जो निर्विघ्न समय पर पूरा हुआ। ज्ञानसरोवर के निर्माण सम्बन्धी कारोबार हेतु दादीजी से रोज मिलना होता था और वे नित्य नई प्रेरणायें हमें देती थी। दादीजी ने हमारी तकलीफ, समस्याओं को इतना सहज तरीके से हल कर देती थी जैसे कि यह हुआ ही पड़ा हो। यह दादीजी की अपनी विशेषता थी कि वह खुद भी हल्का रहती थी और दूसरों को भी हल्का रखती थी और समाधान भी देती थी। यह बात मैं कभी भूल नहीं पाता।

दादीजी में स्नेह की शक्ति इतनी जबरदस्त थी की जो कोई भी उनको मिलता वह उन्हें भूल नहीं पाता था। वो तो जैसे विनम्रता की मूर्ति थी। छोटों को रिगार्ड देना, उनकी योग्यता के अनुसार ईश्वरीय सेवा में लगाना यह परख शक्ति जैसे स्वयं भगवान ने उन्हें गिफ्ट के रूप में दी हो। दादीजी समय की पाबंदी का बहुत ख्याल रखती थीं। मुझे याद है कि जब ज्ञानसरोवर के उद्घाटन की तरीख तय कर दी गई थी तो उस समय बहुत सारा कार्य बाकी पड़ा हुआ था। दादीजी रोज कार्य प्रोग्रेस के बारे में पूछती थी और राय देती थीं। ठण्डी के समय में निर्माण कार्य चल रहा था। दादीजी अक्सर वहां आकर सभी को गरम-गरम पकौड़े और हलवा खिलाया करती थी और सभी को उमंग-उत्साह से भरपूर कर देती थी। हमें याद है कि उस दिन सुबह 10 बजे हार्मनी हॉल का उद्घाटन होना था। और जहां से ऊपर हॉल में जाना था उसकी सीढ़ी का कार्य उसी दिन सुबह के चार बजे पूरा हुआ था। उस ठण्डी में भी लोगों ने बहुत ही उमंग-उत्साह से काम किया था। जब दादीजी ने उन लोगों से पूछा कि किसी को ठण्डी तो नहीं लगी, किसी को कोई परेशानी तो नहीं हुई। उनका यह पूछना कि सभी लोग अपनी थकान भूल जाते थे और उमंग-उत्साह से भर उठते थे। उस समय किसी को यह अनुभव ही नहीं

- शेष पेज 8 पर...

जहाँ पड़े कदम, वहाँ-रचा इतिहास : दादी जानकी

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियां बदलने के कारण भिन्न- भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं पर दादी जी को हर परिस्थिति में अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प या बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। दादी जी ने कानपुर, लखनऊ, पटना, मुम्बई आदि अनेक स्थानों पर अनेकानेक आत्माओं को प्यारे बाबा के वर्से का अधिकारी बनाया।

प्यारे बाबा के अव्यक्त होने के बाद, संगठन के किले को मजबूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। बाबा के अव्यक्त होने पर मेरे मन में प्रश्न था कि अब मुरली कौन सुनाएगा? प्यारे बाबा ने कहा, दादी (प्रकाशमणि) मुरली सुनायेंगी और पुरानी मुरलियाँ दोहराई जायेंगी। सचमुच, दादी जी ने ऐसी मुरली चलाई जो साकार बाबा की भासना हमें मिलती रही। सन् 1974 में दादी और दीदी, दोनों ने मुझे विदेश सेवा के लिए भेजा। प्यारे बाबा की श्रीमत और बड़ों की दुआओं से जर्मनी, अफ्रीका, कनाडा, करेबियन आदि स्थानों पर सेवा का बीज पड़ा। लंदन तो सेवा का मुख्य केन्द्र था ही। उन दिनों पूरे चार साल मैं मधुबन नहीं आई। हाँ, दादियाँ हमारे पास आती रहीं। सन् 1977 में दादी हमारे पास आई। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर

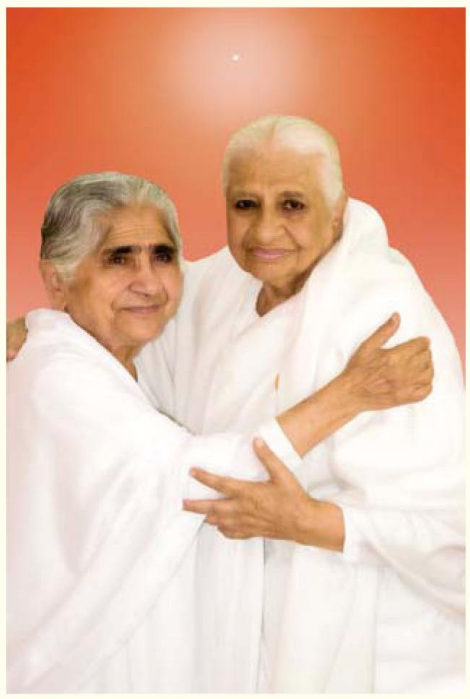

मैंने निरंतर ऐसी ही आदत बना ली है। दादी ने ही लंदन में ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हो। दादी की नेचुरल रूहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था।

यह मेरा महान् भाग्य है कि दादी ने सदा ही मुझ पर हक रखा। मैंने भी दादी की समीपता का बहुत सुख पाया है। दीदी मनमोहिनी जी ने सन् 1983 में जब देह त्याग किया तो सभी का विचार था कि शायद अब मुझे मधुबन में ही रखेंगे परंतु मीठी दादी ने ही उमंग दिलाकर मुझे विश्व सेवा पर भेजा। मधुबन मुख्यालय की ज़िम्मेवारियाँ निभाते हुए स्वयं भी विश्व सेवा पर जाती रहीं और जहां-जहां उनके कदम पड़े, वहां-वहां ईश्वरीय सेवा के नये बीज अंकुरित हुए, सेवा वृद्धि को पाती गई।

जब दादी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर ज़रा भी दुःख, चिंता की लहर नहीं दिखाई। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुन्दर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। संक्षेप में यही कहूँगी कि बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्रोत बन गई।

दादी ने किसी की कोई बात चित्त में नहीं रखी :दादी हृदयमोहिनी

साकार बाबा इस बात पर बहुत ध्यान देते थे कि हर बच्चा, मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) बहुत ध्यान से सुने। यदि मुरली सुनते समय किसी बच्चे को उबासी आ जाती थी तो बाबा तुरन्त कहते थे इसको उठाओ, नहीं तो वायुमण्डल पर बुरा प्रभाव पड़ेगा। बाबा मिसाल देते थे कि जैसे सीप पर जल की बूंद गिरती है तो मोती बन जाती है, इसी प्रकार आपकी बुद्धि पर भी ये ज्ञानामृत की बूंदें पड़ रही हैं, एक-एक बूंद ज्ञान-मोती का रूप धारण करती जा रही है। अत: हमारे में इतने मोती बाबा डालते हैं, भरपूर करते हैं मोतियों से, तो हमारा इतना ध्यान होना चाहिए। बाबा के सामने मुरली सुनने बैठे बच्चों में से, यदि किसी ने बाबा की मधुर शिक्षाएँ सुनकर चेहरे द्वारा प्रतिक्रया व्यक्त नहीं की तो बाबा कहते थे, यह कौन बुद्धू सामने बैठा है? इतना ध्यान बाबा बच्चों पर देते थे। बाबा का प्यार भी भरपूर था, तो शिक्षाएँ भी भरपूर देते थे। मान लो, किसी बच्चे ने कोई ग़लती कर दी तो बाबा उसे व्यक्तिगत रूप से बुलाकर ग़लती नहीं सुनाते थे। मुरली में ही सब सुना देते थे कि महारथी बच्चे भी ऐसे-ऐसे करते हैं, बाबा के पास रिपोर्ट आती है। ग़लती करने वाला

तो समझ जाता था कि यह बात मुरली में मेरे लिए आई है। मुरली के बाद, बाबा के कमरे में हम बहनें और भाई जाते थे जिसे चैम्बर नाम से जाना जाता था। बाबा अपनी गद्दी पर विष्णु मुआफिक लेट-से जाते थे और हम सभी बच्चे आस-पास बैठ जाते थे। मान लो, बाबा ने मुरली जिस बच्चे के लिए चलाई, वह भी बाबा के सामने चैम्बर में आ गया तो उसका मन तो अन्दर से खा रहा होता था कि बाबा अभी भी कुछ कह न दें, पर बाबा कभी नहीं कहते थे। यदि, वह हिम्मत करके बाबा के बहुत करीब भी चला जाये तो भी बाबा और ही प्यार करते थे। मुरली के बाद उस बात को कभी नहीं दोहराते थे कि बच्चे, तुमने अमुक ग़लती की है। फिर वह बच्चा भी भूल जाता था। इस प्रकार बाबा बहुत प्यार करते थे, ग़लती करने वाला बेधड़क बाबा के सामने जा सकता था, पर उसको स्वयं ही इतना एहसास हो जाता था कि भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराता था। बाबा हँसा-बहला कर उस बात को समाप्त कर देते थे, पर वह बच्चा पूरा बदल जाता था।

ऐसा ही दादी का स्वभाव था। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई आदि-आदि तो दादी कभी भी उसकी बात बड़ी बहन को सुनाकर उलाहना नहीं देती थीं कि तुमने छोटी बहन के साथ ऐसा-वैसा क्यों किया। हाँ, दादी जी उस छोटी बहन को ऐसा प्यार देती थीं जो उसके मन को पूरा ठीक कर देती थीं। पर बड़ी बहन को बुलाए, फिर कहे, तुमसे छोटी बहन नाराज़ है, क्या करती हो, कभी नहीं। दादी क्लास कराती थीं, सब कायदे-कानून समझाती थीं, पर व्यक्तिगत मिलन में सीधा नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया है। इस प्रकार, दादी जी दिल में कुछ नहीं रखती थीं। क्योंकि दिल में कोई भी बात घर कर जाए तो खुशी गुम हो जाती है। बाबा ने कहा है, जीवन भले जाए पर ख़ुशी न जाए।